सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥१॥

In Hindi मातृ पृथ्वी के लिए नमस्कार! सत्य (सत्यम), ब्रह्मांडीय दैवीय नियमो (रितम), सर्वशक्तिमान परब्रहम मे विद्यमान आध्यात्मिक शक्ति, ऋषियो मुनियों की समर्पण भाव से किये गये यज्ञ और तप,–इन सब ने मा धरती को युगों –युगों से संरक्षित और संधारित किया है। वह (पृथ्वी) जो हमारे लिए भूत और भविष्य की सह्चरी है, साक्षी है,- हमारी आत्मा को इस लोक से उस दिव्य ब्रह्मांडीय जीवन (अपनी पवित्रता और व्यापकता के माध्यम से) की और ले जाये।